प्रातः क्लास 25-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। (बापदादा के हाथ में भाँतिये के फूल थे) बाबा सा० कराते हैं ऐसे खुशबूदार फूल बनने है। बच्चे जानते हैं हम फूल बने थे जरूर। गुलाब फूल भी बने थे, भाँतिये के फूल भी बने थे अथवा हीरे भी बन थे। फिर अभी बन रहे हैं। यह है सच्ची। आगे तो थे झूठी। झूठ ही झूठ। सच्च कीस्ती नहीं। अभी तुम सच्चे सच्चे बनते हो। तो फिर सच्चे में सभी गुण भी चाहिए। ज जितनी जिस में गुण है उतना औरों को भी दान दे आप समान बना सकते हैं। इसलिए बाप कहते रहते हैं बच्चों को बच्चे पोतामेल रखो अपने गुणों का। देखो हमारे में कौन सी अवगुण है। दैवी गुणों में क्या कमी है। शाम को वा रात को रोज अपना पोतामेल निकालो। दुनिया के मनुष्य की तो बात ही अलग हैं। तुम अभी मनुष्य नहीं हो ना। तुम हो ब्राहमण। भल मनुष्य तो सभी मनुष्य हो हैं। परन्तु हरेक के चलन में, गुणों बहुत फर्क पड़ जाता है। माया के राज्य में भी कोई2 मनुष्य बहुत अच्छे गुणवान होते हैं। परन्तु बाप को तो नहीं जानते हैं। बड़े रीलिजीयस माईन्डेड नर्म दिल होते हैं क्योंकि दुनिया में तो सभी प्रकार के मनुष्य रहते हैं ना। मनुष्यों की गुणों की वेराईटी है। और जब देवताएं बनते हैं तो देवीगुण तो सभी में हैं। बाकी पढ़ाई के कारण मर्तबे कम हो पड़ते हैं। एक तो पढ़ना है दूसरा अवगुणों को निकालना है। यह तो बच्चे जानते हैं हम सारी दुनिया से ही न्यारे हैं। यहां जैसे कि ब्राहमण कुल बैठा हुआ है। शुद्र कुल और ब्राहमण कुल में रात-दिन का फर्क है। शुद्र कुल में है मनुष्यमत। ब्राहमण कुल में है ईश्वरीय मत। पहले2 तुमको बाप का परिचय देना है। तुम बतलाते हो फलाना यह यह कहते हैं, तुमसे आरगु करते हैं। बाबा ने समझाया था लिख दो हम ब्राहमण अथवा ब्रहमाकुमारी-कुमार हैं ईश्वरीय मत। तो समझ जावेंगे इन से ऊंचा तो कोई है नहीं। ऊंच ते ऊंच है भगवान। तो हम उनकी मत पर हैं। मनुष्यमत पर हम नहीं चलते हैं। ईश्वरीय मत पर चल हम देवता बनते हैं। मनुष्यमत अभी छोड़ते जाते हैं। बिल्कुल छोड़ ही दी है। फिर तुम से कोई आरगु कर न सके। कोई कहे यह कहां से सुना, किसने सिखलाया है। तुम कहेंगे हम हैं ईश्वरीयम त पर। प्रेरणा की तो बात ही नहीं। ईश्वरीय प्रेरणा और ईश्वरीयम त में रात दिन का फर्क है। प्रेरणा का कोई अर्थ ही नहीं। प्रेरणा अर्थात विचार। बस हम तो डायरेक्ट ईश्वर के मत पर चलते हैं। बेहद के बाप के, ईश्वर से हम समझे हुये हैं बोलो भक्ति मार्ग के शास्त्रमत पर तो हम बहुत समय चले। अभी हमको मिली है ईश्वरीयम त। वह भक्ति मार्ग है ही अलग। यह है ज्ञान मार्ग। तुम बच्चों को तो बाप ही महिमा करनी है। पहले2 यह बुधि में बिठाना है। हम ईश्वरीयम-त पर हैं। मनुष्य मत हम नहीं सुनते। ईश्वर ने कहा है हियर नो इवील मनुष्यमत। सी नो मनुष्य। अपने को आत्मा देखो। शरीर को न देखो। यह तो पतित शरीर है। ********** इनको क्या देखने का है। इन आंखों से यह न देखो। शरीर तो पतित का पतित ही है। शरीर यहां कब सुधरने का नहीं है। और ही पुराना होना ही है दिनप्रति दिन। सुधरती है आत्मा। आत्मा ही अविनाशी है। इसलिए बाप कहते हैं सी नो ईवील। इसी का शरीर को भी नहीं देखना है। देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध हैं उनको भूल जाना है। बाकी सिर्फ आत्मा को देखो। एक परमात्मा बाप से सुनो। इसमें ही मेहनत है। तुम फेल भी करते हो यह बड़ी सबजेक्ट है। जो हैशियार होंगे उनको फिर पद भी इतना ऊंच मिलेगा। सेकण्ड में जीवन मुक्ति मिल सकती है। परन्तु अगर पुरा पुरुषार्थ न किया तो फिर सजा भी बहुत खानी पड़ेगी। तुम बच्चे अंधों की लाठी बनते हो बाप का परिचय देने के लिए। आत्मा को देखा नहीं जाता है। जाना जाता है। आत्मा है कितनी छोटी। इस आकाश तत्व में मनुष्य देखो कितने जगह लेते हैं मनुष्य तो आते जाते हैं ना। आत्मा कहा आती जाती है क्या। आत्माओं की कितनी छोटी जगह होगी। बिचार की बात है आत्मा कितनी अति सूक्ष्म है। आत्माओं का झुण्ड कितना छोटा होगा। शरीर में भेंट में आत्मा कितनी छोटी है। कितनी छोटी जगह लेगी। तुमको तो रहने के लिए बहुत जगह चाहिए। सारी आत्माओं को इकट्ठा करो तो भी एक फर्लांग भी नहीं होगा। इसमें सभी आत्माएं आ जावेंगी। बुधि से काम लिया जाता है। अभी तुम बच्चे विशाल बुधि बने

हो। मनुष्य तो कह देते परमात्मा नाम रूप से न्यारा है। फिर तो आत्मा भी नाम-रूप से न्यारी बाकी क्या है। कुछ भी नहीं। यह सभी बातें बिचार की जाती है। हमारा रहने का स्थान ब्रह्म महत्तत्व है, कितना बड़ा है। आकाश तत्व से भी उनको बड़ा कहेंगे। इनका भीअन्त नहीं, उनका भी अन्त नहीं। समुद्र का भी अन्त नहीं ले सकते हैं। बहुत फर्क है। वह है हम आत्माओं का घर। यहां हम आते हैं पार्ट बजाने। कितना बड़ा शरीर मिलता है। कितने कर्म-ईन्द्रियां हैं। क्या2 करते हैं। यह बिचार करते भी बाप याद आते हैं। बाबा सभी बातें समझाते हैं नई दुनिया के लिए। और फिर बताने वाला भी नया है। कृष्ण भगवानुवाच है नहीं। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान वह बता न सकें। वह तो कुछ भी नहीं जानते। तुम कहेंगे वह राजयोग का का अक्षर भी नहीं जानते। तुमको यह कौन समझाते हैं, पहले2 यह बताना है। मनुष्य तो कोई नहीं जानते हैं। सब से रहम मांगते रहते हैं। अपन में ताकत नहीं है जो अपन पर रहम कर सकें। तुमको ताकत मिली है। तुमने बाप से वरसा लिया है। और कोई को रहमदिल नहीं कहा जाता। मनुष्य को कब देवता नहीं कह सकते हैं। रहमदिल यक ही बाप है। जो मनुष्य को देवता बनाते हैं। बाकी तो सभी हैं काग बिष्टा समान रहम करने वाले। इसलिए कहते हैं परम पिता परमात्मा की महिमा अपरमअपार है। उसका पारा-वार नहीं। बाप जो नई दुनिया बनाते हैं उसमें सभी कुछ नया होता है। मनुष्य, पशु, पंक्षी सभी ~~क्रमसे~~ तमोप्रधान होते हैं। बाप ने समझाया है तुम ऊंच बनते हो तो तुम्हारा फर्नीचर भीऐसा ऊंच होता है। सभी चीज़ ऊंच ते ऊंच होते हैं। ऊंचे ते ऊंचा भगवान गाया हुआ है। वह हैं बेहद का बाप। ऊंच ते ऊंच बाप से विश्व की बादशाही मिलती है। बाप सिर्फ कहते हैं हम तीरी पर ~~बहिश्त~~ बहिश्त ले आया हूं। वह लोग तरी से कैसर आद निकालते हैं। यहां तो पढ़ाई की बात है। सच्ची रियल ~~पढ़~~ पढ़ाई। तुम समझते हो हम पढ़ रहे हैं। पाठशाला में आये हैं यह पाठशालायें तुम बहुत खोलो तो तुम्हारे एक्टविटी को देख कोई उल्टी चलन चलते हैं तो नाम बदनाम कर देते हैं। देह अभिमान बवसे की एक्टविटी ही अलग होगी। देखेंगे ~~ऐसे~~ ऐसी एक्टविटी है तो फिर सभी कलंक लग जाता है। समझते हैं ~~इनके~~ इनके एक्टविटी में तो फर्क नहीं है। तो गोया बाप की निन्दा कराई ना। सारा दोष उस पर आ जाता है। गुण बहुत अच्छी चाहिए। तुम्हारा कैरेक्टर्स बदलने में कितना टाईम लगता है। तुम समझते हो कोई2 के कैरेक्टर्स बहुत अच्छी फर्स्ट क्लास हो जाते हैं। वह दिखाई भी पड़ेंगे। बाबा एक एक बच्चे को बैठ देखते हैं। इनको कर्म-ईन्द्रियां क्या2 करती हैं। इनमें क्या2 गुण हैं। क्या2 अवगुण हैं। गुण औ अवगुण दोनो पर ही नजर जावेंगे। इसमें क्या2 खामियां हैं। जो निकालनी चाहिए। एक एक की जांच करते हैं। खामियां तो सभी में हैं। तो बाप सभी को देखते रहते हैं। रिजल्ट देखते रहते हैं खामियों उपर। बाप का तो बच्चों पर लव रहता है ना। जानते हैं इन में यह खामि है। इस कारण यहउतना ऊंच पद पा नहीं सकते हैं। अगर खामियां न निकलेंगी तो बड़ा मुश्किल है। देखने से ही मालूम पड़ जाता है। कोई गड़बड़ होगी तो बाबा को सिकल फिरते रहेंगे। यह तो जानते हैं अभी टाईम पड़ा है बाकी खामियां निकालने लिए। उमीद है सुधर जावेंगे। कितना टाईम लगता है एकएक की जांच करने। बाप की नजर एक एक के गुणों पर पड़ेंगे। पूछेंगे तुम्हारे में कोई अवगुण तो नहीं हैं। बाबा के आगे तो सच्च बता देते हैं कोई2 को देहअभिमान रहता है तो नहीं बताते हैं। बाप तो कहते रहते हैं आपे ही जो करे सो देवता, कहने से ~~न~~ करे सो मनुष्य, कहने से भी न करे सोगदहा। बाबा कहते रहते हैं जो भी खामियां हैं इस जन्म के वह बाप के आगे वर्णन करो। आपे ही बतावेंगे। बाबा तो सभी को कह देते हैं। खामियां सर्जन को बतानी चाहिए। शरीर की बिमारी नहीं अन्दर की बिमारी बतानी है। तुम्हारे पास अन्दर में क्या2 आसुरी ख्यालात रहते हैं। तो उस पर बाबा समझावेंगे। इस हालत में तुम इतना ऊंच पद नहीं पा सकेंगे। जब तक अवगुण न निकले। अवगुण बहुत निन्दा कराते हैं। मनुष्यों को शक पड़ता है भगवान इनको पढ़ाते हैं। भगवान तो नाम रूप से न्यारा है। सर्वव्यापी है वह कैसे इनको पढ़ावेंगे। इनकी चलन कैसी है। यह तो बाप जानते हैं तुम्हारे गुण कैसे फर्स्ट क्लास होनी चाहिए। अवगुण

विकर्म छिपा देंगे तो कोईको इतना तीर नहीं लगेगा। इसलिए जितना हो सके अपन में अवगुण जो हो उनको निकालते जाओ। नोट करो हमारे में यह यह खामी है। तो किल दिल अन्दर में आवेंगी। घाटा पड़ता है तो दिल खाता है ना। व्यापारी लोग रोज अपना खाता निकालते हैं। आज कितना फायदा हुआ। रोज का देखते हैं। यह बाप भी कहते हैं रोज अपनी चाल देखो। नहीं तो अपना बहुत नुकसान कर देंगे। बाप के पत गंवाये देंगे। गुरु की निन्दा कराने वाला ठौर न पायें। देहअभिमानी ठौर न पावेंगे। देही अभिमानी अच्छे ठौर पावेंगे। देहीअभिमानी बनने लिए ही पुरुषार्थ करना है। दिन प्रति दिन सुधरते जाते हैं। देहअभिमानी से जो कर्तव्य होते हैं उनको काटते रहना है। देह अभिमान से पाप जरूर होता है। इसलिए देहीअभिमानी बनते रहो। यह तो समझते हैं जन्म लेते ही कोई बनता। 40-50 बर्ष तुमको लग जाते हैं देहीअभिमानी बनने में। टाईम तो लगता है ना।

यह भी तुम समझते हो अभी हमको जाना है। दुनिया में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो समझे अभी हमको जाना है। जैसे कि जनावर बुद्धि हैं। बाबा के पास बच्चे आते हैं कोई 6 मास बाद आते हैं कोई तीन मास बाद भी आते हैं। तो बाप देखते हैं इतने समय में क्या उन्नति हुई है। दिन-प्रति-दिन कुछ ~~सुधरते~~ सुधरते रहते हैं या कुछ दाल में काला है। कोई चलते2 पढ़ाई छोड़ देते हैं। बाबा कहते हैं यह क्या। भगवान तुमको पढ़ाते हैं भगवान-भगवती बनाने। ऐसी पढ़ाई तुम छोड़ देते हो। तुम तो बहुत ही कमजोर हो। वर्ल्ड गाडफादर पढ़ाते हैं। इसमें अपसेन्ट। माया कितनी प्रबल है। फर्स्ट क्लास पढ़ाई से तुम्हारा मुख ही मोड़ देती है। बहुत ही चलते रहते हैं। फिर पढ़ाई को लात मार देते हैं। यह तो तुम समझते हो हमारा अभी मुंह है स्वर्ग के तरफ। लात है नर्क तरफ। तुम हो संगम युगी ब्राह्मण। यह पुरानी रावण की दुनिया। उस तरफ लात है। मुंह है स्वर्ग तरफ। उनको तो पूरा याद करना चाहिए। हम बाबा शान्तिधाम सुखधाम जरूर जावेंगे। बच्चों को यही याद रखना पड़े। टाईम थोड़ा है। कल शरीर भी छूट जाता है। बाप की याद न होगी तो फिर अन्त काल जो सिमरे ..

बाप समझाते तो बहुत हैं। बहुत मेहनत करनी है अपने साथ। गुप्त बाप है। नालेज भी गुप्त है। यह भी जानते हैं कल्प पहले जितना पुरुषार्थ किया है वही कर रहे हैं ड्रामा अनुसार। बाप भी कल्प पहले मिशाल समझाते रहते हैं। इसमें फर्क नहीं पड़ सकता। बाप को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जाये। सजा न खानी चाहिए। बाप के सामने सजायें बैठ जावेंगे तो बाप क्या कहेंगे। तुमने सा० भी किये हैं। उस समय सिर उपर नहीं कर सकते बाप के सामने। इन द्वारा बाप पढ़ाते हैं तो इनका ही सा० होगा। इन द्वारा ही हम को समझाते रहते हैं। तुमने यह क्या किया है। फिर उस समय बहुत रावेंगे चिल्लायेंगे। अफसोस भी करेंगे। बिगर सा० सजा मिल न सके। कहेंगे तुमको इतना पढ़ाते थे फिर भी तुम ऐसे के काम किया। जैसे बाबा ने मिशाल बताया बच्चों की मत पर बच्चियों का काम चिक्षा पर बिठाये कत्लाम कर दिया। तो कितना पाप हुआ। ऐसा पाप तो इस समय तक कोई ने नहीं किया है। सजा भी बहुत कड़ी है। बाप के साथ योग लग न सके।

तुम भी समझते हो रावण के मत पर हमने कितने पाप किये हैं। पूज्य से पुजारी बन पड़े हैं बाप को सर्व-व्यापी कहते आये। यह तो पहले नम्बर ही की इनसल्ट है। इसका हिसाब किताब भी बहुत है। बाप डोरापा देते हैं तुमने अपन को कैसे चमाट मारी है। हिन्दु तो कोई धर्म है नहीं। कितने वेसमझ बन पड़े हैं। भारत वासी ही कितना गिरे हैं। बाप आकर समझाते हैं। अभी तुमको कितनी समझ मिली है। सो भी नम्बरवार ही समझते हैं। ड्रामा अनुसार आगे भी ऐसे ही इस समय तक क्लास की यह रिजल्ट थी। बाप बतावेंगे तो सही ना। तो बच्चे अपनी ~~उन्नति~~ उन्नति करो। देहअभिमान छोड़ते रहो। माया ऐसी है जो देहीअभिमानी रहने नहीं देती है। यह ही बड़ी सबजेक्ट है। अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करो तो पाप भस्म हो जावेंगे। तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। कितनी फर्स्ट क्लास सीधी बात है। मनुष्य से देवता बनना बहुत बड़ा इम्तहान है। इसमें कोई भी किताब शास्त्र आदि की बात ही नहीं। यह बाप आकर पढ़ाते हैं। तुमसे आरग्यु करते हैं पूछना

चाहिए ना तुम किसके मत पर बात करते हो। मनुष्य मत पर, शास्त्रमत पर। ईश्वरीयमत पर तो कह न सके। क्योंकि मत तो सम्मुख मिलती है ना। प्रेरणा आद की बात ही नहीं। ऐसे भी कहते हैं भगवान ने प्रेरणा की। भगवान हमारे अन्दर को जानते हैं। बाबा के आगे भी कहते आप तो सभी कुछ जानते हो। बाबा कहते हैं मैं तो तुमसे पूछता हूं। जानता होता तो पूछने की दरकार ही नहीं। यह तो हम जानते हैं तुम जंगली उल्लू पाजी बन पड़े हो। इसमें सभी आ जाते हैं। यह जानता हूं। बाकी क्या होगा जो पूछूं। बच्चे समझते हैं बाबा ठीक ही कहते हैं। हम पहले बन्दर से भी बदतर थे।। कहां वेश्यालय कहां यह शिवालय। कहां वह मनुष्य पढ़ाते कहां यह सभी आत्माओं का बाप पढ़ाते हैं। तुम कितने मेहनत करते हो। भगवान पढ़ाते हैं यह निश्चय हो जाये तो हम भी उससे हो पढ़ेंगे। परन्तु ड्रामा अनुसार किसकी बुधि में बैठता नहीं है। इतनी प्रदर्शनी की। क्या तुम समझते हो सच्च= सचमुच किसको निश्चय हुआ? एक को भी नहीं। भगवान पढ़ाते हैं यह किसको भी निश्चय नहीं हुआ। अच्छा किसको निश्चय भी हो। फिर बाप का नाम बाला कर दिखावे। मेहनत है ना। तुम्हारे मल सर्विस करते हैं परन्तु दैवी गुण कहां हैं। निश्चय बुधि वालों की एक्टविटी तुम बच्चों को बतलाते रहते हैं। इसको कहा जाता है निश्चय। वह बाप को बहुत ही लव करेंगे। जानते हैं बाबा हमारे तकदीर को बहुत ही ऊंच बनाते हैं। बाप का बच्चा बन फिर कब रोना भी न है। रो लिया तो कौन कहेंगे इनको निश्चय है। राजा का बच्चा भी रो लवे। तुम तो ईश्वर के बच्चे हो ना। देवताएं कबरोते ही नहीं। यह सभी सीखना तो यहां है अभी तुम जानते हो भारत ऐसा था। कब अकाले मृत्यु नहीं होती थी। नाम ही है अमरपुरी। बाप काल पर जीत पहनाते हैं। वहां काल का डर नहीं। यहां तो डर रहता है ना। तुम्हारी जब वह अवस्था हो जायेगी तो फिर खुशी से शरीर छोड़ देंगे। बस अभी तो हम जाते हैं। यह अवस्था पिछाड़ी को होगी। भांउ होती है। ऐसे बैठे2 शरीर को छोड़ देंगे। सोये हुये भी नहीं। सेकण्ड ग्रेड वाले सन्यासी भी ऐसे बैठे2 शरीर छोड़ देते हैं। फिर भी पुनर्जन्म में तो आते हैं। उनके शिष्य लोग समझते हैं ज्योति ज्योत में समाया। लीन हो गया। बाबा का देखा हुआ है ऐसे बैठे2 शरीर छोड़ देते हैं। बड़ा ही शान्त का वायुमंडल हो जाता है। हम भी बाबा के पास जावेंगे* ऐसे ही बैठे2 । पास विथ ऑनर तब कहा जाता । नूंध हो ऐसी है। बड़ा खुशी से जैसे सजनी साजन पास खुशी से जाती है। आत्माओं का बाप भी साजन है ना। तो ऐसे बैठे2 जाना चाहिए। क्वेस्टविलेवेड माशुक है। ऐसे जब शरीर छोड़ेंगे तो प्राईज मिलेगा। तुम समझते हो बरोबर बाबा ठीक कहते हैं। जाना है तो ऐसे। अपनी अवस्था की जांच करनी है। कोई स्त्रीयां पति के पिछाड़ी चिखा पर चढ़ती है। कितनी निडर होती है। कोई उनको रोक न सके। फिर उस पति के साथ मिलती है। मनोकामना पूरी होती है। एक जन्म के लिए। आगे सती स्त्रीयों का बहुत गायन था। पति में मोह बहुत रहता था। फिर भी भिकारी दुनिया में ही मिलते हैं। सतयुग में तो ऐसी बातें होती ही नहीं। तो बाप के पास जाने लिए भी ऐसी निर्भय अवस्था चाहिए। पतियों के पति पास भी ऐसे ही जानी चाहिए। सतयुग में तो विधवा आद ऐसे छी2 अक्षर होते ही नहीं। यह अवस्था जमाने लिए अभी टाईम पड़ा है। जब लड़ाई का भी टाईम फाईनल आ जाता है तब वह अवस्था कम्पलिट जम जाती है। जानते तो हो कलियुग है फिर सतयुग कैसे आना चाहिए। बाकी सभी अपने घर चले जाते हैं। आत्मा कहती है हम जाते हैं अपने स्वीटहोम खुशी से। पुरुषार्थ करने से क्या नहीं हो सकता। वह तो पिछाड़ी के समय ऐसी प्रेरणा आती है। हमको अभी जाना है। वह ड्रामा में नूंध है। जाने लिए तख्त पर बैठ जावेंगे। कहा मालूम पड़ता है कहां से हम शरीर छोड़कर जाकर बच्चा बनेंगे। वैसे यह भी मालूम पड़ेगा। कहां भी होंगे ऐसे ही बैठ कर जावेंगे। रास्ते चलते थोड़ी ही शरीर छोड़ देंगे। बड़ी मीठी अवस्था चाहिए। दिन प्रति दिन तुम बच्चों को बहुत ही खुशी होती रहेगी। तब गाया जाता है मिरवा मौत मलूं का शिकार। शंकराचार्य सच्च कहते हैं ब्रह्माकुमारियां हिन्दधर्म का नाश चाहती हैं। परन्तु कैसे विनाश चाहती हैं फिर क्या होगा। यह थोड़ी ही समझ सकते हैं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडमार्निंग।